सफलता की कहानियां

-जिला बिलासपुर

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती
प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना
हिमाचल सरकार

मार्गदर्शन

ओंकार शर्मा (भा.प्र.से.)
प्रधान सचिव (कृषि)

राकेश कंवर (भा.प्र.से.)
विशेष सचिव (कृषि) एवं
राज्य परियोजना निदेशक

संकलन एवं संपादन

प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

रोहित पराशर
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

रमन कान्त
उप-संपादक

सहयोग

डॉ० रवि कुमार शर्मा
जिला परियोजना निदेशक, बिलासपुर

डॉ० देश राज शर्मा
जिला परियोजना उप-निदेशक-I, बिलासपुर

डॉ० राजेश कुमार
जिला परियोजना उप-निदेशक-II, बिलासपुर

मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला - 171002

हमारे राज्य को 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है। यहां का किसान-बागवान मेहनतकश, ईमानदार तथा नई तकनीक की स्वीकार्यता हेतु हमेशा तत्पर रहता है। प्रदेश के इन्हीं किसान-बागवानों के कारण आज हमें देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त हुई है। मौसमी-बेमौसमी सब्जी उत्पादन में भी 7,500 करोड़ से अधिक की आय प्रदेश आज अर्जित कर रहा है। लेकिन इस बढ़ती खुशहाली में किसान का खेत से प्रवासन, कीटनाशकों एवं अन्य खेती रसायनों का बढ़ता एवं अंधाधुंध प्रयोग, बढ़ती कृषि-बागवानी लागत और भोजन व फल-सब्जी में पाए जाने वाले इन रसायनों के अंश प्रदेश के सामने एक चुनौती भी पेश कर रहे हैं। साथ ही 2022 तक किसान-बागवान की आय दोगुनी करने का मा० प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी का सपना भी हमें पूरा करना है। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के शुभारम्भ से हमारी सरकार ने यह पहल आरम्भ कर दी है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा कृषि विभाग के माध्यम से बड़ी तीव्र गति से खेती संरक्षण एवं किसान आय वृद्धि हेतु एक व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। बिलासपुर जिला में प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की सफलता की कहानियों का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे पूर्ण आशा है कि परियोजना के अधिकारियों के मार्गदर्शन में यह सफल किसान अपने-2 गांव तथा पंचायत में 'प्राकृतिक खेती' के इस अभियान को तेजी से आगे बढ़ाएंगे। जिला में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' अभियान से जुड़े कृषि अधिकारियों और किसानों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं।

-जयराम ठाकुर

कृषि, पशुपालन, मत्स्य, ग्रामीण
विकास एवं पंचायती राज मंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला - 171002

हिमाचल प्रदेश सरकार की अति महत्वकांक्षी योजना 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' के अंर्तगत जिस तरह से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को अपनाने हेतु किसान-बागवान रूचि दिखा रहे हैं, यह निश्चय ही प्रदेश के लिए बहुत उत्साहवर्धक है। पिछले दो वर्षों में लगभग 77,000 किसान-बागवानों का 2,957 पंचायतों में प्राकृतिक खेती से जुड़ना यह आभास दिलाता है कि प्रदेश के सभी कृषि-भौगोलिक क्षेत्रों में, हर फसल तथा फलों पर किसान-बागवानों ने इस पद्धति को अपनाने का चुनौतीपूर्ण कार्य स्वीकार कर लिया है।

इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) द्वारा विभिन्न फसलों तथा फलों के उत्पादन, कीट-बीमारी प्रबंधन तथा किसान आय वृद्धि इत्यादि मानकों पर एकत्र किए आंकड़े निश्चित रूप से इस योजना की अपार सफलता को बयान कर रहे हैं। प्रदेश में किसानों का खेती खर्च घटाने, बिना कृषि रसायनों के फसल उत्पादन कर किसान आय दोगुनी करने तथा प्रदेश के जल-जमीन एवं पर्यावरण को समृद्ध बनाने हेतु इस योजना का कार्यान्वयन एक सुखद तथा अनुकरणीय पहल है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जुड़े सफल किसानों के अनुभव, उनके खर्चे में आई कमी तथा आय में वृद्धि जैसे मुख्य बिंदुओं का संकलन एवं प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। नए किसान-बागवानों की जागरूकता एवं शिक्षण हेतु ऐसे संकलन एक प्रेरणा का काम करेंगे। मेरी इन सभी किसान-बागवानों को शुभकामनाएं तथा 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) को उनके विविध एवं सफल प्रयासों हेतु बधाई।

-वीरेन्द्र कंवर

प्रधान सचिव
कृषि एवं जनजातीय विकास
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

कृषि – बागवानी क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश के किसानों ने एक अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। लेकिन इसी खेती – बागवानी में कुछ प्रमुख चुनौतियां भी हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रही हैं। खेती में रसायनों का दुरूपयोग जिससे खेती की लागत का बढ़ना, उत्पादकता का स्थिर होना या घटना, एक – फसल खेती एवं उससे बाजार में फसल की प्रचुरता से भाव न मिलना इत्यादि प्रमुख हैं। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना का शुभारम्भ कर प्रदेश सरकार ने 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाने का नीतिगत फैसला लिया है।

इस खेती विधि को देशभर में मिल रही अपार सफलता ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह विधि खेती को रसायनमुक्त कर किसान के खेती व्यय को बहुत कम कर देती है। इसमें पानी की आवश्यकता घट जाती है तथा भूमि की उर्वरता भी लगातार बनी रहती है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' ने इस परियोजना के लक्ष्य प्राप्ति हेतु गम्भीर प्रयास प्रारम्भ किये हैं। आंकड़ों के अनुसार 77,107 से अधिक किसानों का इस विधि से जुड़ाव इस तथ्य को साबित करता है कि यह विधि किसान आय वृद्धि हेतु एक सशक्त विकल्प है।

परियोजना के संचालन के थोड़े समय बाद ही 'प्राकृतिक खेती' से जुड़े सफल किसानों की कहानियों का प्रकाशन इस परियोजना का सफलता की ओर बढ़ना दर्शाता है। मैं बिलासपुर जिला के सभी प्राकृतिक किसानों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ। 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' को इस प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

– ओंकार शर्मा

विशेष सचिव, कृषि
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

देशभर में कृषि क्षेत्र में आई हरित क्रान्ति के दुष्प्रभाव आज समाज और जीवन पर पड़ते स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं। भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास, किसानों की बढ़ती खेती लागत, घटता या स्थिर होता उत्पादन तथा अन्ततोगत्वा किसान का खेती–बागवानी से हटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन चिन्ता का विषय बन गया है। हमारा राज्य हिमाचल प्रदेश भी इन दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है। रसायनिक खेती के इन प्रत्यक्ष दुष्प्रभावों के निदान हेतु 'जैविक खेती' का विकल्प भी सार्थक सिद्ध नहीं हुआ। 'जैविक खेती' का आदान आपूर्ति हेतु बाजार से जुड़ाव इस विधि को अधिक खर्चीला बना रहा है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के अन्तर्गत पद्मश्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित खेती विधि क्रियान्वयन द्वारा पिछले दो वर्ष के छोटे से अन्तराल में 77,107 से अधिक किसान–बागवानों ने अपने–2 खेत–बागीचों में इस खेती विधि के मॉडल खड़े कर लिए हैं। यह हिमाचल प्रदेश की खेती को रसायनमुक्त करने की दिशा में एक सार्थक पहल है। इस परियोजना के संचालन का कार्य 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' के माध्यम से पूरे प्रदेश में सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें हमारे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी तन्मयता से ध्येयपूर्वक कार्य कर रहे हैं।

बिलासपुर जिला के सफल किसानों के खेती विवरण का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रयास से अन्य प्राकृतिक खेती किसान भी अपने आप को सफल किसान के रूप में लाने का प्रयत्न करेंगे। मेरी जिला के सभी किसानों के लिए शुभेच्छा।

–राकेश कंवर

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती-संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर-रोग-कीट-प्राकृतिक संकट-कृषि कर्ज एव चिंता मुक्त के साथ-साथ किसान-बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही-सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाएगा। इन सभी क्रियाओं का इसलिए 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नामकरण किया गया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतु बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. **जीवामृत** किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव-जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

2. **बीजामृत** देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध-जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत के प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. **आच्छादन** भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतु इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. **वापसा** (भूमि में वायु प्रवाह) यह वापसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा-तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. **सह-फसल** मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करे।

2. मेढ़ें तथा कतारें खेतों के बीच कतारों में मेढ़ें तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षाकाल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. गोबर भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़-पौधों के लिए किसी भी बाहरी रसायनिक खाद की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट-पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकूल वातावरण का निर्माण कर फसलों को शत्रु कीट-पतंगों एवं बीमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जो इसमें बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलकर समय-समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए बनी रहती है।

इस प्राकृतिक खेती की मूल आवश्यकता पहाड़ी या कोई भी भारतीय नस्ल की गाय है। इन नस्लों की गाय के गोबर में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या दूसरी विदेशी किस्म की गायों या अन्य जानवरों की तुलना में 300 से 500 गुणा अधिक है। अत: इस विधि में अधिकतम लाभ लेने के लिए विभिन्न आदान पहाड़ी या किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर तथा मूत्र से बनाए जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में इस प्राकृतिक खेती के प्रचार, प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन हेतु एक व्यापक योजना से कार्य प्रारम्भ हो चुका है। माननीय राज्यपाल के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में एक सर्वोच्च समिति का गठन हुआ है। इस समिति के प्रबोधन में 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कार्य कर रही है। कृषि विभाग के आतमा परियोजना के अधिकारियों द्वारा जिला स्तर पर इस परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष एक निश्चित लक्ष्य को लेते हुए सन् 2022 तक प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को इस खेती विधि से जोड़ना है। अभी तक प्रदेश के सभी जिलों के 80 विकास खण्डों में इस विधि द्वारा उत्कृष्ट मॉडल खड़े कर किसानों को इनमें भ्रमण करवाया जा रहा है। चालू वर्ष में प्रदेश की सभी 3,226 पंचायतों तक इस लक्ष्य को पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश को देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त है। पिछले दो दशकों में प्रदेश ने बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में भी अपनी पहचान बनाई है। आज प्रदेश से लगभग 7,500 करोड़ की फल – सब्जियां देश के विभिन्न राज्यों में जा रही हैं। लेकिन स्थिर होती फसल उत्पादकता और बढ़ती कृषि – बागवानी लागत, किसान – बागवान के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। एक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार प्रदेश में खेती रसायनों के बढ़ते दुरूपयोग के कारण हर 5वां फल – सब्जी इत्यादि का नमूना कीटनाशक – फफूंदनाशक अवशेष ग्रसित है, 3 से 4% फल – सब्जियों इत्यादि के नमूनों में कीटनाशक – फफूंदनाशकों की अवशेष मात्रा अधिकतम तय सीमा से ऊपर मिल रही है जो देशभर के आंकड़ों से लगभग 1% अधिक है। खेती – बागवानी की यह परिस्थिति किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए गम्भीर चिंता का विषय बनती जा रही है।

देश का किसान आज एक ऐसी व्यावहारिक खेती विधि की तलाश में है जिससे उसकी कृषि लागत घटे और उत्पादकता तथा आय में वृद्धि हो। 'जैविक खेती' के रूप में प्रचारित वैकल्पिक विधि ने आम किसान का उत्पादन तो घटाया ही, साथ ही रसायनिक खेती के अनुपात में कृषि लागत को भी अधिक बढ़ा दिया।

हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'किसान की आय दोगुनी' करने हेतु फरवरी 2018 में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना प्रारम्भ कर इस दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के किसान – बागवानों को 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' विधि में प्रशिक्षित किया जा रहा है। देश की नीति निर्धारण संस्था 'नीति आयोग' ने अपने दृष्टि पत्र में यह संदर्भित किया है कि 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि किसान की खेती लागत कम करने के साथ फसल उत्पादकता बढ़ाने हेतु सक्षम खेती विधि है, जिसे अपनाकर किसान आय दोगुनी करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा प्रदेश में एक व्यापक कार्ययोजना बनाई गई है जिसमें विभिन्न गतिविधियों द्वारा एक लाख किसानों को इस वर्ष प्राकृतिक खेती विधि से जोड़ा जा रहा है। साथ ही अन्य एक लाख किसानों को विभिन्न माध्यमों द्वारा इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। अभी तक प्रदेश भर में कुल 78,792 किसान प्रशिक्षित किए गए हैं जिनमें से 77,107 ने इस पद्धति से पूरी या आंशिक रूप से खेती करना आरंभ कर दिया है। विभिन्न प्रदेशों के अधिकारी और किसान इनके मॉडल फार्म पर भ्रमण कर रहे हैं।

इस प्राकृतिक विधि का जो किसान पूरी तरह प्रशिक्षित होकर प्रयोग कर रहे हैं उनकी सफलता को आंकड़ों सहित इस पुस्तिका में देने का प्रयास किया गया है, ताकि इन किसानों को प्रोत्साहन मिले और वे दूसरों के लिए भी प्रेरक बनें। भविष्य में ऐसे सफल किसानों की कहानियों को जिलावार प्रदेश के अन्य जिलों में भी प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

– प्रो॰ राजेश्वर सिंह चंदेल

जिला बिलासपुर-परिदृश्य

बिलासपुर जिला का कुल भौगोलिक क्षेत्र 1,167 वर्ग किलोमीटर (1,12,13 5 हैक्टेयर) है जोकि राज्य के कुल क्षेत्रफल का 2.1 % है। हिमाचल प्रदेश के सभी जिलों में क्षेत्रफल के आधार पर बिलासपुर जिला 11वें स्थान पर है। जिला के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है, जिसमें बेमौसमी टमाटर, खीरा, अदरक, व जिमीकंद प्रमुख नकदी फसलें हैं। जिला के किसान पॉलीहाउस में खीरा, शिमला मिर्च, टमाटर व फूलों की खेती की ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं जिससे उनकी आर्थिकी सुदृढ़ हो रही है। गर्म जलवायु वाले इस जिला के किसानों ने सेब की बागवानी, जिमीकंद की खेती एवं दुग्ध उत्पादन की सफलता से देशभर में विशेष ख्याति अर्जित की है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना को धरातल पर उतारने के लिए आतमा परियोजना के अधिकारियों के अनथक प्रयासों का ही नतीजा है कि जिला के किसान बड़ी तेज गति से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि को अपना रहे हैं।

विस्तृत विवरण

कुल कृषक
74,712

भाषा
हिंदी, पहाड़ी

आबादी
3,81,956

कुल क्षेत्रफल
1,12,135 हैक्टेयर

कृषि योग्य क्षेत्र
55,507 हैक्टेयर

वर्ष 2020-21 में लक्षित प्राकृतिक खेती किसान
3,000

प्राकृतिक खेती परियोजना के क्रियान्वयन की खण्डवार स्थिति

क्रम सं.	विकास खण्ड	कुल कृषक	प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षित किसान 31 अगस्त 2020 तक	प्राकृतिक खेती कर रहे किसान 31 अगस्त 2020 तक	प्राकृतिक खेती के अधीन भूमी (हैक्टेयर में)
1	बिलासपुर सदर	18,920	1,557	1,321	51.55
2	घुमारवीं	27,971	1,064	1,038	60.84
3	झंडूता	18,941	1,134	1418	43.34
4	श्री नैना देवी जी	8,880	1,152	927	46.35
कुल योग		74,712	4,907	4,704	202.09

सफल प्राकृतिक खेती किसान

गगन पाल, गांव व पंचायत सायर डोबा, ब्लॉक बिलासपुर सदर

अजय रत्न, गांव निऊं, पंचायत मैहरी काथला, ब्लॉक घुमारवीं

बुद्धि राम, गांव निहारखण्ड बासला, पंचायत कोटला, ब्लॉक बिलासपुर सदर

करतार सिंह, गांव व पंचायत बैहना जट्टा, ब्लॉक झंडूता

जगरनाथ, गांव व पंचायत तलवाड़ा, ब्लॉक घुमारवीं

सुरेंद्र भारती, गांव सुई, पंचायत सुई सुरहाड़, ब्लॉक बिलासपुर सदर

प्रवीण कुमार, गांव व पंचायत लंझटा, ब्लॉक घुमारवीं

बचित्र सिंह, गांव कसोल, पंचायत मोरसिंघी, ब्लॉक घुमारवीं

कैप्टन जिंदू राम, गांव व पंचायत कंदरौर, ब्लॉक बिलासपुर सदर

कर्म सिंह, गांव व पंचायत बल्हसीणा, ब्लॉक झंडूता

रामकली, गांव व पंचायत कुटैहला, ब्लॉक श्री नैना देवी जी

नानक राम, गांव व पंचायत नौणी, ब्लॉक बिलासपुर सदर

अमी चंद शर्मा, गांव लुहणू, पंचायत लद्दा, ब्लॉक घुमारवीं

मंगल सिंह ठाकुर, गांव व पंचायत कुटैहला, ब्लॉक श्री नैना देवी जी

प्रहलाद, गांव प्योड़ी, पंचायत कोठी, ब्लॉक घुमारवीं

दुख से उबरने में प्राकृतिक खेती बनी सहारा, मुसीबतें भी नहीं डिगा सकी जुनून

बाजार भाव से अधिक दाम देकर प्राकृतिक उत्पाद खरीद रहे लोग

गगन पाल, मो. 82197-33214

दो दशकों तक लैब टैक्निशियन की नौकरी और खुद की लैब में विभिन्न तरह के रसायनों से घिरे रहने वाले **गगन पाल** खेती में प्रयोग हो रहे रसायनों के दुष्प्रभावों से चिंतित रहते थे। वह इनसे छुटकारा तो पाना चाह रहे थे, लेकिन जैविक खेती जैसी मंहगी तकनीक को अपनाने से भी हिचकिचा रहे थे। ऐसे में बिलासपुर जिला के 'सायर डोबा' गांव के इस किसान को सरकार की ओर से शुरू की गई 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के बारे में जानकारी मिली तो उन्होंने इसे अपनाने से जरा सी भी देरी नहीं लगाई। इस खेती विधि के बारे में जानकारी मिलने के बाद उन्होंने इसे अपनी छोटी सी क्यारी में परीक्षण के तौर पर शुरू किया और जब इसमें उन्हें संतोषजनक परिणाम देखने को मिले तो उन्होंने इसे अपनी 8 बीघा भूमि में शुरू कर दिया। इस खेती विधि की और अधिक जानकारी पाने के लिए उन्होंने महाराष्ट्र के पुणे का भी दौरा किया और वहां प्राकृतिक खेती विधि के जनक पदम्श्री सुभाष पालेकर से प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गगन बताते हैं कि पत्नी के देहांत के बाद मैं अगर इस दुख से उबर पाया हूँ तो इसके पीछे प्राकृतिक खेती विधि का ही जुनून है। मैंने पूरा समय इस खेती में लगाकर दुख की उन दर्दनाक घड़ियों को बिताया है। गगन पाल ने न सिर्फ प्राकृतिक खेती विधि को अपने खेतों में शुरू किया है, बल्कि अपने साथ 15 और किसानों को इस खेती विधि से जोड़कर यह युवा किसान 'प्राकृतिक खेती राज्य' बनाने की मुहिम में अमूल्य योगदान दे रहा है।

गगन पाल का मिश्रित खेती मॉडल

रसायनिक खेती के दौरान मुझे और मेरे परिवारवालों को स्प्रे के बाद आंखों में जलन होना तथा उल्टी आना आम बात हो गई थी। अब घर में बने अपने आदानों के प्रयोग से इन सब बीमारियों से पीछा छूट गया है।

पुणे में प्रशिक्षण के दौरान एक तो मैं लम्बे सफर से थका था, दूसरे रहने के लिए मात्र दरी-कम्बल था। ऊपर से जब बुखार और सिर दर्द हुई तो लगा कि घर जाने के बाद कृषि विभाग से सम्पर्क तोड़ लूंगा। लेकिन जब पालेकर जी को दिन में बीमारी की हालत में भी सुनता था तो बीमारी भूल कर नया उत्साह आ जाता था। पालेकर जी सच में ही कृषि-ऋषि हैं।

गगन ने इस खेती विधि को पूरी तरह अपनाने के लिए राजस्थान से गिर नस्ल की गाय लाई है। जिसके लिए सरकार की ओर से उन्हें अनुदान मिला है। उन्होंने अपने खेतों में मक्की, सोयबीन, मूंग, अरहर, जिमीकंद, अरबी, अदरक, टमाटर, शिमला मिर्च, घीया और तोरी लगाई है। उनका कहना है कि उन्हें अपनी सब्जियों को बाजार में ले जाने की जरूरत नहीं पड़ती है। लोग बाजार भाव से 5–10 रूपये अधिक देकर खेतों से ही सब्जियां और अन्य उत्पाद खरीदकर ले जाते हैं।

गगन का कहना है कि रसायनिक खेती में जहां उनका खर्चा 12 हजार प्रति बीघा था, वह अब घटकर 8 हजार रूपये प्रति बीघा रह गया है। अगले साल से इसे और कम करने के लिए उन्होंने दालों के साथ अब गन्ना उगाना भी शुरू कर दिया है ताकि गुड़ और बेसन के खर्चे को भी कम किया जा सके। इनके खेत विभिन्न अधिकारियों एवं सीखने वाले अन्य किसानों के लिए भ्रमण के प्रमुख केन्द्र बने हुए हैं।

अपने परिवार के साथ उत्तम प्राकृतिक खेती किसान गगन पाल

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
8 बीघा	8 बीघा	मक्की, सोयाबीन, मूंग, अरहर, जिमीकंद, अरबी,अदरक, टमाटर, शिमला मिर्च, घीया और तोरी	व्ययः 72,000 आयः 1,12,000	व्ययः 64,000 आयः 1,44,000

प्राकृतिक खेती ने दिलाया नया मुकाम
कृषि अनन्य बने अजय रत्न

1500 किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रति कर चुके हैं जागरूक

अजय रत्न, मो. 98167-39041

सहायक अभियंता के तौर पर 10 वर्षों तक नौकरी करने के बाद गांव आकर खेती–बाड़ी शुरू करने वाले घुमारवीं के किसान **अजय रत्न** ने भी आम किसानों की तरह खेती करना शुरू किया था। लेकिन कृषि लागत में हो रही बेतहाशा बढ़ोतरी को देखते हुए, अजय रत्न ने इसमें कुछ नया कर किसानों के लिए एक सस्ता और टिकाऊ खेती मॉडल पेश करने की ठानी। इसके लिए अजय रत्न ने 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाया है और खेती की लागत को शून्य तक पहुंचाकर लोगों के लिए प्रेरणा बने हैं। अजय रत्न 25 बीघा भूमि में खेती–बाड़ी कर रहे हैं। इनके सफल मॉडल को देखकर क्षेत्र के 250 किसान इनके साथ जुड़ चुके हैं। अजय मास्टर ट्रेनर हैं और अभी तक 1500 से अधिक किसानों को सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि के बारे में जागरूक कर चुके हैं। प्राकृतिक खेती का सफल मॉडल पेश करने के चलते अजय रत्न को वर्ष 2019 में राज्यपाल हिमाचल प्रदेश आचार्य देवव्रत ने 'कृषि अनन्य' सम्मान से सम्मानित किया है।

सफल प्राकृतिक किसान अजय रत्न का मिश्रित खेती मॉडल

मैंने अपने 5 बीघा क्षेत्र में केवल सब्जियां उगाई हैं। इन्हें बेचने के लिए मैं बाजार नहीं जाता बल्कि लोग खुद मेरे घर में आकर सब्जियां ले जाते हैं। मेरे पास 200 के करीब ऐसे उपभोक्ता हैं, जो हमेशा रसायनमुक्त ही खरीदना चाहते हैं।

नौकरी छोड़ने के बाद अजय रत्न को पिता और परिवार का सहयोग मिला। इस खेती विधि के लिए सबसे जरूरी देसी नस्ल की गाय है जो उनके पास नहीं थी। इसलिए उन्होंने इसे अपनाने से पहले अपने रिश्तेदारों से देसी गाय ली और अब खुद की दो गायें खरीद कर न सिर्फ अपनी खेती के लिए प्राकृतिक आदान तैयार किये हैं, बल्कि दूर–दूर से आने वाले किसानों को भी इन्हें मुहैया करवा रहे हैं।

अजय रत्न हर साल 5 लाख से अधिक की कमाई कर रहे हैं और इसके लिए उनका खर्चा महज 2–3 हजार रूपये ही आ रहा है। अजय रत्न बताते हैं कि प्राकृतिक खेती विधि में बाजार से कुछ भी सामान लाने की जरूरत नहीं होती है। खेती में प्रयोग होने वाले सभी संसाधन घर के आस–पास ही मिल जाते हैं, जिससे कृषि लागत बिल्कुल न के बराबर होती है। उन्होंने बताया कि इस खेती विधि में मानव स्वास्थ्य के साथ भूमि के स्वास्थ्य में भी लगातार सुधार होता जाता है।

नौकरी छोड़ने का निर्णय घरवालों के लिए असहज था क्योंकि समाज में चर्चा थी। लेकिन प्राकृतिक खेती ने मुझे अपने समाज का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बना दिया है।

अपने परिवार के साथ खुशहाल किसान अजय रत्न

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
25 बीघा	25 बीघा	गन्ना, चने, गेहूं, मटर, मक्की, सोयाबीन, मूंग, अरहर, अरबी, अदरक, टमाटर, शिमला मिर्च, घीया और तोरी	व्ययः 30,000 आयः 45,000	व्ययः 3,000 आयः 5,00,000

पीला रतुआ हुआ बेअसर प्राकृतिक खेती ने किया चमत्कार

खाद्यान्न के साथ पशुचारे पर भी प्राकृतिक खेती के अच्छे परिणाम

बुद्धि राम, मो. 98170-93663

गेहूं की फसल में पीला रतुआ एक प्रमुख रोग है। पिछले एक दशक से उत्तर भारत के राज्यों में पीला रतुआ रोग का फैलाव बढ़ा है। इससे किसानों की काफी फसल बर्बाद हुई है। हिमाचल प्रदेश के भी सभी जिलों में गेहूं की फसल पर यह बीमारी आती है। रसायनिक और जैविक खेती तकनीकें इस रोग पर नियंत्रण पाने में कारगर साबित नहीं हुई हैं। लेकिन 'प्राकृतिक खेती' तकनीक से किसानी कर रहे बिलासपुर सदर विकास खण्ड के **बुद्धि राम** का दावा है कि इस तकनीक के प्रयोग से उनके खेतों में पीला रतुआ का प्रकोप नहीं हुआ। रवी सीजन में उनके क्षेत्र में भी पीले रतुए की समस्या आई मगर यह रोग उनके खेतों तक पहुंच भी नहीं पाया। उनके गांव एवं आस–पास के किसान प्राकृतिक खेती का यह चमत्कार देखकर अचंभित हैं और इस खेती पद्धति की तरफ मुड़ रहे हैं।

अपना मिश्रित खेती मॉडल दिखाते हुए बुद्धि राम

64 साल के बुद्धि राम ने वर्ष 2018 में प्राकृतिक खेती की शुरूआत की है। 1 बीघा भूमि में गेहूं के साथ चना और सरसों की फसल के अच्छे परिणामों को देखकर उन्होंने बाकी भूमि पर भी प्राकृतिक खेती करना शुरू कर दिया। बुद्धि राम ने बताया कि 2018 में उनके भांजे ने पालमपुर विश्वविद्यालय से प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया। उसके कहने पर मैंने भी अपनी जमीन पर प्राकृतिक खेती करनी शुरू कर दी। पहले साल मुझे 1 बीघा जमीन से 5 क्विंटल गेंहू की पैदावार मिली। खाद और कीटनाशक का खर्च खत्म हो जाने से मैंने पूरी जमीन पर प्राकृतिक खेती का निर्णय ले लिया। विभिन्न खेती आदान बनाने के लिए मैं साहीवाल नस्ल की 2 गायें राजस्थान से खरीद कर ले आया हूँ।

गांव के खेतों में जब आस-पास के किसानों ने केवल मेरे खेतों में ही पीला रतुआ रहित गेहूं की फसल देखी तो इस चमत्कार से सभी दंग रह गए। यह वाकई अदभुत विधि है।

बुद्धि राम ने बताया कि पशुचारे के लिए खेतों में बरसीम उगाई थी जिसे 7 बार काट चुके हैं। इस साल रवी सीजन में उन्हें 20 क्विंटल गेहूं की पैदावार मिली है। खरीफ सीजन के लिए उन्होंने 33 किलोग्राम मक्की की बिजाई की है। बुद्धि राम का अपना संसाधन भंडार भी है जहां पर प्राकृतिक खेती के सभी आदान मौजूद हैं।

रसायनिक छोड़ प्राकृतिक खेती की ओर मुड़े बुद्धि राम को साथी किसानों और गांव वालों ने हतोत्साहित भी किया। मगर धुन के पक्के इस किसान ने उनकी बातों को कोई तवज्जोह नहीं दी। बुद्धि राम का 14 लोगों का संयुक्त परिवार खेती में उनका पूरा सहयोग करता है। खेती में और अच्छा करने के लिए वह सीड ड्रिल मशीन लेने की योजना बना रहे हैं। बुद्धि राम आस–पास के किसानों को इस खेती विधि से जोड़ने के लिए भी प्रयास कर रहे हैं।

प्राकृतिक खेती विधि में मित्र कीटों के आने से शत्रु कीटों का प्रकोप कम हुआ है जिससे फसलों पर आने वाली बीमारियों में कमी आई है।

अपने परिवार के साथ प्राकृतिक खेती किसान बुद्धि राम

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
15 बीघा	15 बीघा	गेहूं, मक्का, चना, सरसों, सोयाबीन, लहसुन, अदरक, प्याज, अरबी, मेथी	व्ययः 30,000 आयः 65,000	व्ययः 20,000 आयः 3,00,000

प्राकृतिक खेती पारंगता से बनाया खेती जंगल फसल-विविधता के बने पर्याय

नए प्राकृतिक किसानों को दे रहे आदान और उन्नत बीज

करतार सिंह , मो. 94593-70819

मिट्टी से जुड़े रहना और हर पल कुछ नया करने की चाह ही है, जो इस किसान को अन्य किसानों से अलग करती है। बिलासपुर के झंडूता ब्लॉक के 'बैहना जट्टा' के किसान **करतार सिंह** ने न सिर्फ अपने खेतों में 50 से अधिक फसलों और फलों के पौधे लगाए हैं, बल्कि वह इन्हें बिना किसी खर्च के प्राकृतिक तौर पर सफलतापूर्वक उगा भी रहे हैं। करतार सिंह बताते हैं कि वह हमेशा खेती में लागत को कम करने के साथ, नये पौधों और विभिन्न तरह की फसलों को उगाने का शौक रखते हैं। वह बताते हैं कि सेना में सेवा के दौरान उन्हें देश के अलग–अलग इलाकों में काम करने का मौका मिला। इस दौरान वह उन इलाकों से कुछ फसलों के बीज या पौधे अपने साथ ले आते थे और इन्हें अपनी जमीन में उगाते थे। करतार सिंह ने खेती में नये प्रयोग के तौर पर वर्ष 2019 में राजस्थान के भरतपुर में 'प्राकृतिक खेती' विधि के जनक पद्मश्री सुभाष पालेकर से उनकी खेती विधि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके तुरंत बाद उन्होंने अपनी पूरी 20 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती विधि से खेती करना शुरू कर दिया।

प्राकृतिक खेती विधि का सबसे स्पष्ट और अच्छा परिणाम मुझे फलों और अनाजों के स्वाद के रूप में देखने को मिला। इसके अलावा मिट्टी की सेहत में पहले साल से ही सुधार होना शुरू हो गया है। सिंचाई की पर्याप्त सुविधा न होने के बावजूद भी फसलों में अच्छी उपज देखने को मिल रही है।

अंगूर की फसल दिखाते प्राकृतिक खेती किसान करतार सिंह

करतार सिंह ने अपने खेतों में 4 किस्म की गेहूं उगाई है, इसमें काली किस्म की गेहूं विशेष है। इसके अलावा 5 तरह के आम के पौधे, अंगूर, 3 तरह की मक्की, 3 तरह के नींबू, चना, मटर, सरसों, हल्दी, लहसुन, 4 तरह की मिर्च, 2 तरह के टमाटर, इलायची, ग्रीन टी, सोयाबीन, लोबिया, मूंग और अरहर के साथ कई अन्य तरह की फसलें और फल प्राकृतिक खेती विधि से तैयार किए हैं।

करतार सिंह के सफल खेती मॉडल को देखकर आस–पड़ोस के 25 से अधिक किसान भी उनके साथ जुड़ गये हैं। करतार सिंह इन किसानों को अपने घर में तैयार हुए आदान देने के साथ कई उन्नत बीज भी मुहैया करवाते हैं ताकि किसानों को अच्छे बीज मिलने से उनकी पैदावार में बढ़ोतरी हो और उनका मुनाफा बढ़े।

कोई भी फसल या किस्म की बात करो-सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती में यह सब लहलहाएंगी। मेरे खेत इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

अपने परिवार के साथ प्राकृतिक खेती किसान करतार सिंह

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
18 बीघा	5 बीघा	मक्की, सोयाबीन, मिर्च, गेहूं, हल्दी, अदरक, मटर, अरबी, गन्ना, चना	व्ययः 34,000 आयः 48,000	व्ययः 26,000 आयः 48,000

प्राकृतिक खेती ने उबारा 20 वर्षों का उतार-चढ़ाव

लॉकडाउन में 50 क्विंटल खीरा बेच कर कमाये 1 लाख 10 हजार

जगरनाथ , मो. 98163-63636

विकास खण्ड घुमारवीं के 'निऊं' गांव के किसान **जगरनाथ** ने स्वस्थ जीवन के लिए स्वस्थ भोजन को सर्वोत्तम माना है। इलैक्ट्रीकल इंजीनियर रहे जगरनाथ पारिवारिक समस्या के चलते खेती की तरफ आए। पहले से प्रचलित रसायनिक खेती करने के दौरान वह इस खेती में बढ़ रहे खर्च और थमते उत्पादन को महसूस कर रहे थे। रसायनों के सेहत पर पड़ते प्रभावों को देखकर उन्होंने खाद और कीटनाशकों के प्रयोग को त्यागने का मन बना लिया। उनकी रसायनमुक्त खेती प्रणाली की तलाश 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' पर आकर खत्म हुई।

वर्ष 2018 में आतमा परियोजना बिलासपुर के अधिकारियों के माध्यम से जगरनाथ को 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के बारे में पता चला जिसके बाद उन्होंने वर्ष 2018 में पालमपुर विश्वविद्यालय में पद्मश्री सुभाष पालेकर से इस खेती का प्रशिक्षण लिया। घर पहुंचते ही उन्होंने प्राकृतिक विधि से खेती करना शुरू कर दिया। खेतों से एक फसल लेने के बाद उन्होंने अपने 1000 वर्ग मीटर के पॉलीहाउस में भी 'प्राकृतिक खेती' से सब्जियां उगाना शुरू किया है, जहां वह खीरा, बीन्स और अन्य मौसमी सब्जियां उगा रहे हैं।

सफल प्राकृतिक खेती किसान जगरनाथ का मिश्रित खेती मॉडल

कुछ जगहों में किसान को उत्पाद बेचने में दिक्कत आ रही है। ऐसे में सरकार से गुजारिश है कि प्राकृतिक उत्पाद की मार्केटिंग पर ध्यान दिया जाए, ताकि किसानों को अपना उत्पाद बेचने के लिए भटकना न पड़े।

कई गांव वाले तो उन्हें अभी भी रसायनों का इस्तेमाल करने के लिए कहते हैं। लेकिन प्राकृतिक खेती से मिले परिणामों से जगरनाथ बेहद संतुष्ट हैं। रवी सीजन में उन्हें गेहूं की अच्छी पैदावार मिली है। सह–फसल के तौर पर मटर और सरसों से भी अतिरिक्त कमाई हुई है। इसके अलावा अपने पॉलीहाउस से वह पिछले 3 महीने से हर रोज 50 किलोग्राम खीरा बेच रहे हैं। जगरनाथ के इलाके में बंदर बहुत हैं जिस कारण किसानों के बीच फसल सुरक्षा चिंता का विषय है। लेकिन उन्होंने इस समस्या का हल भी खोजा है। खरीफ सीजन में मक्की की फसल सुरक्षा के लिए उन्होंने खेत के कोनों पर भिंडी लगाई है, जिससे बंदरों की खेतों में आवक कम हुई है। आस–पास के अन्य किसान भी उनके इस नुस्खे को अपना रहे हैं।

कृषि विभाग की तरफ से जगरनाथ को संसाधन भंडार बनाने के लिए सहायता भी दी गई है। इस संसाधन भंडार से वह नए प्राकृतिक खेती किसानों को गोबर और गोमूत्र देते हैं। साथ ही नए किसानों को आने वाली समस्याओं के हल भी वह फोन के माध्यम से देते हैं। जगरनाथ अब एक बागीचा भी लगा रहे हैं जिसमें वह 400 फलदार पौधे लगाने की योजना बना रहे हैं।

गुजरात से 20 वर्ष पहले नौकरी छोड़ने के बाद कृषि विभाग ने खेती के लिए बहुत सहायता की। लेकिन वक्त के उतार-चढ़ाव से अब थक गया था। प्राकृतिक खेती प्रारम्भ कर एक नई उमंग के साथ उत्साहित हूं।

अपने परिवार के साथ प्रगतिशील प्राकृतिक खेती किसान जगरनाथ

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
20 बीघा	6.25 बीघा	मक्की, गेहूं, भिण्डी, मटर, सरसों, खीरा	व्ययः 35,000 आयः 65,000	व्ययः 19,160 आयः 1,85,000

इस खेती ने ही दिलाई सामाजिक एवं आर्थिक पहचान

कैबिनेट मिनिस्टर्स और विधानसभा अध्यक्ष से भी पा चुके हैं शाबासी

सुरेंद्र भारती, मो. 82650-92127

बिलासपुर जिला के घुमारवीं विकास खण्ड के तहत 'सुई' गांव से संबंध रखने वाले किसान **सुरेंद्र भारती** का कहना है कि सब्जियों की खेती में 'प्राकृतिक खेती' से बेहतर परिणाम मिल रहे हैं। एक ओर जहां बीमारियां कम आ रही हैं तो वहीं सब्जियों पर चमक और स्वाद अनोखा है। लोग भी इन सब्जियों की खरीददारी को तरजीह दे रहे हैं जिससे किसानों के चेहरे पर खुशी के भाव हैं। 3 बीघा जमीन पर प्राकृतिक तरीके से खेती कर रहे सुरेंद्र भारती ने 2019 में नौणी विश्वविद्यालय से प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षण लिया है।

सुरेंद्र ने प्रशिक्षण के दौरान बताए गए प्राकृतिक खेती आदानों जीवामृत, घनजीवामृत, सप्तधान्यांकुर अर्क इत्यादि का खेती में इस्तेमाल किया। जिससे उन्हें अच्छी और गुणवत्तापूर्ण पैदावार मिली है। गेहूं और मक्का जैसे अनाजों के उत्पादन के साथ उन्होंने टमाटर, मटर, भिंडी और मूली की फसल भी अपने खेतों से ली है। सुरेंद्र ने एक नए खेत में टमाटर की फसल प्राकृतिक विधि से लगाई। साथ लगे खेतों में पड़ोसी किसानों की रसायनिक विधि से लगी टमाटर की फसल से जब इसकी तुलना की तो पाया कि प्राकृतिक टमाटर में अपेक्षाकृत कम बीमारियां आयीं।

किसान मोर्चा से जुड़े होने के कारण अक्सर मेरा किसानों के साथ मिलना-जुलना रहता है। बैठकों और संगोष्ठियों में प्राकृतिक खेती के बारे में भी चर्चा होती है। इसके परिणामों से प्रभावित होकर किसान यह खेती विधि अपना रहे हैं।

सफल प्राकृतिक खेती किसान सुरेन्द्र भारती का मिश्रित खेती मॉडल

प्राकृतिक खेती कर रहे सुरेंद्र भारती बिलासपुर जिला किसान मोर्चा के अध्यक्ष भी हैं। इस संगठन से जिला के लगभग 4 हजार किसान जुड़े हैं। किसान मोर्चा के आयोजनों में सुरेंद्र साथी किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी देते हैं और इस पद्धति को अपनाने का आग्रह भी करते हैं। सुरेंद्र भारती का कहना है कि प्रदेश सरकार विशेष तौर से प्राकृतिक खेती को तरजीह दे रही है। किसानों को अनुदान राशि भी इसी कड़ी का हिस्सा है।

सुरेंद्र अपने क्षेत्र के बाकी किसानों के साथ अपने उत्पाद बेचने के लिए जिलाधीश कार्यालय भी जाते हैं। जिलाधीश कार्यालय के बाहर लगे प्राकृतिक खेती स्टॉल से उत्पाद जल्दी बिक जाता है। अभी वह सामान्य रेट पर ही अपने उत्पाद बेचते हैं, लेकिन उम्मीद जताते हैं कि जल्दी ही प्राकृतिक उत्पादों को रसायनिक के मुकाबले बेहतर रेट मिलेगा। उनका कहना है कि वैश्विक महामारी के दौर में लोग स्वास्थ्य के प्रति सजग हुए हैं जिसका फायदा प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को मिलेगा।

प्राकृतिक खेती के भविष्य को लेकर सुरेंद्र भारती काफी आशावान हैं। वह कहते हैं कि न्यूनतम खेती लागत में इस पद्धति से अच्छा और पोषणयुक्त भोजन उपलब्ध हो रहा है।

इस विधि के सफल मॉडल खेत पर तैयार कर अब मैं एक सशक्त किसान के रूप में जिला किसान मोर्चा का नेतृत्व करने का हकदार बना हूं। यह विधि लाभकारी ही नहीं बल्कि सामाजिक रूप से भी किसान को जोड़ती है।

सफल प्राकृतिक खेती किसान सुरेंद्र भारती अपने परिवार के साथ

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
35 बीघा	3 बीघा	मक्का, टमाटर, सोयाबीन, घीया, गेहूं, चना, गोभी, मटर, सरसों	व्ययः 20,000 आयः 1,20,000	व्ययः 4 ,000 आयः 1,50,000

खेती में नवीन प्रयोग ही प्रवीण की पहचान
प्राकृतिक खेती से मिल रहा मान-सम्मान

प्राकृतिक खेती विधि से 6 किलोग्राम बीज से उगाई 1 क्विंटल गेहूं

प्रवीण कुमार, मो. 98171-65569

'कृषक प्रेरणाश्रोत' अवार्ड पाने वाले युवा प्रगतिशील किसान **प्रवीण कुमार** ने खेती की लागत को शून्य तक पहुंचाकर अन्य किसानों के लिए उदाहरण पेश किया है। समय और मार्केट को ध्यान में रखते हुए अपने आप को ढालने वाले प्रवीण कुमार इन दिनों 12 बीघा भूमि में मिश्रित खेती कर रहे हैं। इसमें से 3 बीघा भूमि में उन्होंने 'प्राकृतिक खेती' को अपनाया है और खेती के पहले साल में बेहतर परिणाम पाने के बाद अब प्राकृतिक खेती के तहत और अधिक क्षेत्र को लाने का मन बना चुके है। खेती में नए प्रयोग के लिए प्रवीण कुमार को वर्ष 2011 में कृषक प्रेरणाश्रोत अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। जिसकी वजह से उनकी पहचान पूरे क्षेत्र में एक प्रगतिशील किसान के रूप में बन चुकी है। प्रवीण ने अपने खेतों में प्राकृतिक खेती विधि के तहत मक्का, सोयाबीन, अरहर, घीया, टमाटर लगाया है। प्राकृतिक खेती विधि में बाजार से कुछ भी लाने की जरूरत नहीं रहती है जिससे उनका खर्चा नाम मात्र का रह गया है। प्रवीण के आसपास किसान रसायनिक खेती करते हैं और जमकर रसायनों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करते हैं, बावजूद इसके फसलें स्वस्थ नहीं रहती और पैदावार में भी कुछ खास असर देखने को नहीं मिलता है। प्राकृतिक खेती विधि में बहुत कम बीमारियां आती हैं और जो अन्न या सब्जियां पैदा होती हैं उनका स्वाद और गुणवत्ता बेहतर होती है। जिसकी वजह से उन्हें बाजार में बेचने में किसी भी प्रकार की दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ता है।

प्राकृतिक खेती विधि सस्ती तो है ही, साथ ही इससे पैदावार में कोई कमी नहीं आती है। जो किसान इसे पूरी तरह अपनाता है उसके खेतों से बीमारियां दूर रहती हैं।

फसल निरीक्षण के दौरान प्रगतिशील किसान प्रवीण कुमार

मैं तीसरे दिन बाजार में अपनी सब्जियां भेजता हूँ और बाजार में लोगों को मेरी सब्जियों का इंतजार रहता है। कई लोग मेरे नियमित खरीददार बन गए हैं और केवल मेरे खेतों में उगी हुई सब्जियां ही खरीद रहे हैं।

उन्नत किसान प्रवीण कुमार को कृषि विभाग की ओर से वर्ष 2019 में दिल्ली में आयोजित विश्व खाद्य एक्स्पो में भी भेजा गया था, जिसमें उन्होंने दुनिया भर से आए किसानों और खेती–बाड़ी से जुड़े विशेषज्ञों से चर्चा करने के साथ अपने खेतों में उगी हुई सब्जियों को प्रदर्शित भी किया था। इस खेती का मूल आधार देसी गाय है। इसलिए किसानों को देसी नस्ल की गाय की खरीद पर सरकार की ओर से अधिकतम 25 हजार रूपये के अनुदान के साथ 5 हजार रूपये यातायात भत्ते के रूप में दिया जा रहा है। इससे किसानों को प्राकृतिक खेती पद्धति को अपनाने के लिए आर्थिक मदद भी मिल रही है।

पिताजी से लेकर पत्नी तक शिक्षक हैं। लेकिन समाज में जो स्थान एवं सम्मान प्राकृतिक खेती विधि ने दिया - मेरे लिए वह सरकारी सेवा से भी ऊपर है।

अपने परिवार के साथ प्राकृतिक खेती किसान प्रवीण कुमार

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें एवं फल	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
12 बीघा	3 बीघा	मक्का, टमाटर, सोयाबीन, धीया, गेहूं, चना, गोभी, मटर, करेला, सरसों अंजीर, आम, सेब	व्ययः 50,000 आयः 2,00,000	व्ययः 5 ,000 आयः 2,15,000

क्यों करें प्राइवेट नौकरी की चाह जब प्राकृतिक खेती ने दिखाई उत्तम राह

मिश्रित खेती से अतिरिक्त आय पा रहे हैं बचित्र सिंह

बचित्र सिंह , मो. 94185-21127

'प्राकृतिक खेती' लोगों के जीवन की दिशा को बदल रही है। जीविकोपार्जन के लिए प्राइवेट क्षेत्र में नौकरी कर रहे लोग भी खेती का महत्व समझकर इस क्षेत्र में आ रहे हैं। कुछ ऐसी ही कहानी है बिलासपुर जिला के घुमारवीं विकास खण्ड के 'कसोल' गांव से संबंध रखने वाले **बचित्र सिंह** की। पिछले 3 दशक से निजी स्कूल में नौकरी के साथ खेती कर रहे बचित्र सिंह जब प्राकृतिक खेती की तरफ आए तो इसके परिणामों से इतना प्रभावित हुए कि अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। अब वह अपनी और अपनी भाई की 12.5 बीघा भूमि पर प्राकृतिक विधि से खेती कर रहे हैं।

रसायनिक खेती में हो रही लागत वृद्धि और स्वास्थ्य पर कुप्रभावों के चलते बचित्र सिंह ने वर्ष 2016 में जैविक खेती की शुरूआत की। 2 साल तक जैविक खेती करने के दौरान उन्होंने महसूस किया कि जैविक खाद और कीटनाशकों पर खर्चा रसायनिक खेती के जितना ही हो रहा है। नए तरीके से खेती करने के इच्छुक बचित्र सिंह को खण्ड स्तर के कृषि अधिकारियों से प्राकृतिक खेती के बारे में प्राथमिक जानकारी मिली। जिसके बाद वह कृषि विभाग के माध्यम से उत्तर प्रदेश के झांसी में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लेने गए। 6 दिन के इस प्रशिक्षण से लौटकर उन्होंने प्राकृतिक खेती का प्रयोग अपनी जमीन में करना शुरू कर दिया।

सफल प्राकृतिक खेती किसान बचित्र सिंह का मिश्रित खेती मॉडल

मैंने रसायनिक और जैविक खेती को आजमाया है, लेकिन प्राकृतिक खेती में जो परिणाम पहले ही साल में देखने को मिले हैं उससे मेरा उत्साह और बढ़ गया है। मेरी सलाह है कि अन्य किसानों को बिना किसी झिझक के इसे अपनाना चाहिए।

प्राकृतिक खेती आदानों जीवामृत और घनजीवामृत का खेतों में प्रयोग करने से उन्हें गेहूं, मटर, चना, सोयाबीन की अच्छी फसल मिली है। इसके अलावा राजमाश, बैंगन और तोरी की फसल भी उन्होंने अपने खेतों से ली है। प्राकृतिक खेती से प्रभावित बचित्र सिंह किसान जागृति क्लब कसोहल के प्रधान भी हैं। इस क्लब में 25 के करीब किसान जुड़े हैं जिन्हें बचित्र सिंह प्राकृतिक खेती का व्यवहारिक ज्ञान अपने खेतों में ले जाकर दे रहे हैं। अभी तक उन्होंने 200 से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण दिया है।

कृषि विभाग के सहयोग से बचित्र सिंह ने अपना संसाधन भंडार खोला है जहां से वह किसानों को गोबर, गोमूत्र, जीवमृत और घनजीवामृत जैसे खेती आदान देते हैं। वह कहते हैं कि सरकार की 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना खेती की दशा सुधारने में एक बड़ा कदम है। जहरमुक्त और स्वास्थ्यवर्धक फसलों से किसान और प्रदेश दोनों की अखिल भारतीय स्तर पर अलग पहचान बनेगी। साथ ही प्रदेश के लोगों को अच्छे उत्पाद खाने के लिए मिलेंगे।

बचित्र सिंह प्राकृतिक खेती को लेकर बेहद गंभीर हैं और इसे साथी किसानों तक पहुंचाने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। वह जब भी आस–पास के गांवों में जाते हैं तो साथी किसानों से प्राकृतिक खेती के बारे में अवश्य बात करते हैं। साथ ही उन्हें हर संभव मदद की पेशकश भी करते हैं। बचित्र सिंह व्यक्तिगत स्तर पर प्राकृतिक उत्पाद को प्रोसेस कर मार्केट में पहुंचाना चाहते हैं। वह एक लघु उद्योग लगाने की सोच रहे हैं जिससे गांव के बेरोजगार युवाओं को रोजगार भी मिल सके।

मैं प्रार्थना करूंगा सभी मित्रों से जो इस महामारी के दौरान शहरों से गांव आये हैं - प्राकृतिक खेती पैसा, रोजगार ही नहीं देती बल्कि एक सम्मान की जिन्दगी जीना भी सिखा रही है। कभी भी आओ - मेरे खेतों में आपका स्वागत है।

अपने परिवार के साथ प्राकृतिक खेती किसान बचित्र सिंह

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
20 बीघा	12.5 बीघा	मक्की, गेहूं, मटर, चना, सोयाबीन, राजमाश, बैंगन, तोरी, खीरा	व्ययः 60,000 आयः 2,15,000	व्ययः 2,000 आयः 1,30,000

जिंदादिली की मिसाल - 78 वर्षीय किसान कैप्टन जिंदू राम

78 साल के जिंदू राम ने विभिन्न फलों के 400 पौधे लगाये

कैप्टन जिंदू राम, मो. 98170-93663

जिंदगी के 78 बसंत पार करने के बाद जहां एक तरफ ज्यादातर लोग घर में रहकर पूजा–पाठ और आराम की जिंदगी जीते हैं, वहीं **कैप्टन जिंदू राम** उम्र के इस पड़ाव पर भी लोगों को स्वस्थ रहने का संदेश दे रहे हैं। हिमाचल के बिलासपुर जिले के 'कंदरौर' गांव के कैप्टन जिंदू राम ने 78 साल की उम्र में बंजर और बिना पानी वाली भूमि में खेती और बागवानी का एक ऐसा मॉडल खड़ा किया है। जिसे देखकर हर कोई दंग है और उनकी मेहनत का कायल हो रहा है। सेना में 27 साल तक सेवाएं देने के बाद कैप्टन पद से रिटायर आने वाले जिंदू राम बताते हैं कि वह बुजुर्गों को स्वस्थ रहने और बेकार की घरेलू कलह एवं राजनीति से दूर रहने के लिए प्रेरित करते थे। लेकिन लोग उन्हें खुद कुछ करके दिखाने के ताने मारते थे। इसलिए उन्होंने उम्र के इस पड़ाव में परिवारवालों के विरोध के बावजूद अपनी बंजर पड़ी भूमि में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि के तहत बिना किसी खर्च के बागीचा तैयार किया है।

लोगों को कभी भी अपनी उम्र के बारे में नहीं सोचना चाहिए। अपने तन-मन को स्वस्थ रखने के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए और उन्हें पूरा करने के लिए जुट जाना चाहिए। मैं प्राकृतिक से बहुत सन्तुष्ट हूँ। इसे करने से प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ महसूस कर रहा हूँ।

प्राकृतिक खेती किसान कैप्टन जिंदू राम का मिश्रित खेती मॉडल

कैप्टन जिंदू राम ने अपने बागीचे में 10 प्रकार के फलों के 400 के करीब पौधे लगाए हैं। जिनमें अनार के 150 पौधे, किवी के 4 पौधे, गलगल के पौधे, निंबू के 35 पौधे, मौसमी के 60 पौधे, सेब, कटहल, आम, अखरोट, बादाम, खुमानी, प्लम और आड़ू के पौधे तैयार हैं। कैप्टन जिंदू राम इन पौधों में किसी भी प्रकार के रसायनिक कीटनाशकों या खादों को प्रयोग न करके प्राकृतिक विधि में बताए आदानों का प्रयोग करते हैं। पौधों को सही से सभी जरूरी पोषक तत्व मिल सकें इसके लिए वे प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने और बहु–फसलीय प्राकृतिक खेती विधि का प्रयोग करते हैं।

कैप्टन जिंदू राम सच में लोगों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत हैं। उम्र के इस पड़ाव पर भी वह न सिर्फ खुद बिना रसायनों के प्राकृतिक खेती विधि से बागीचे को संभाल रहे हैं, बल्कि अपने घर में देसी गाय के गोबर और गोमूत्र से बनी दवाईयों का प्रयोग कर रहे हैं। जिंदू राम अपने साथ आस–पास के 40 अन्य किसानों को भी जहरमुक्त खेती करने के लिए प्रेरित करने के साथ उन्हें भी जरूरी आदान मुहैया करवा रहे हैं।

सेना का जवान हमेशा जवान ही रहता है। यदि प्रमाण चाहिए तो आओ मेरे खेतों में।
युवा लड़को, सुनो - घर छोड़ कर क्यों शहरों में भटक रहे हो। एक बार खेत में जाकर तो देखो !

अपने परिवार के साथ सफल प्राकृतिक खेती किसान कैप्टन जिंदू राम

अपनी खेती विधि पर इतना फ़ख्र कि सबकी चुनौती करते हैं स्वीकार

प्राकृतिक खेती के लिए 2 साल तक गौशाला से गोबर-गोमूत्र खरीदा

कर्म सिंह , मो. 94599-24839

किसान की सबसे बड़ी चिंता अपने उत्पाद को बेचने की होती है जिसके लिए वह मार्केटिंग का सहारा लेता है ताकि बाजार में उसका नाम बन जाए और उसे अच्छा दाम मिले। इसलिए ज्यादातर किसान अपनी फसल की मार्केटिंग के लिए दौड़ लगा रहे हैं। लेकिन एक किसान ऐसा भी है जो मार्केटिंग की अंधी दौड़ से दूर पूरा ध्यान खेती पर लगा रहा है। बिलासपुर जिला के 'बल्हसीणा' गांव के किसान **कर्म सिंह** पूरे तन–मन से 'प्राकृतिक खेती' कर रहे हैं। कर्म सिंह को उनकी कृषि उपज के खरीददार भी खेत पर ही मिल रहे हैं। 7 बीघा जमीन पर प्राकृतिक खेती कर रहे कर्म सिंह को फसल बुआई से ही खरीददार आर्डर दे देते हैं। जब फसल तैयार होती है तो उसे बाजार ले जाने की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि खरीददार खुद ही उनके यहां से अपना आर्डर ले जाता है। कर्म सिंह कहते हैं कि बदलाव की यह बयार प्राकृतिक खेती से ही शुरू हुई है।

वर्षों से अपनी रसायनिक खेती कर रहे कर्म सिंह का प्राकृतिक खेती की तरफ रूख कृषि विभाग की आतमा परियोजना के एकदिवसीय शिविर के बाद हुआ। इसके बाद उन्होंने पालमपुर विश्वविद्यालय से प्राकृतिक खेती का 6 दिवसीय प्रशिक्षण लिया जिससे खेती के प्रति नजरिया और जुनून दोनों बदल गया। पालमपुर से लौटकर 2 बीघा जमीन में प्राकृतिक खेती की जब शुरूआत की तो घर में गाय न होने से गोबर, गौमूत्र की समस्या आई। मगर धुन के पक्के कर्म सिंह

प्राकृतिक खेती से पढ़े-लिखे युवा भी प्रभावित हो रहे हैं। मेरा बेटा विदेश में नौकरी करता है और बहु पीएचडी है, दोनों इस खेती विधि का समर्थन कर रहे हैं। इनका कहना है कि मेरे बाद वह भी इसी विधि से खेती करेंगे। इससे और लोगों को भी इस अनूठी खेती के प्रति प्रेरणा मिलेगी।

मक्की की फसल में गुड़ाई करते हुए उत्तम प्राकृतिक खेती किसान कर्म सिंह

ने 2 साल तक पड़ोस की गौशाला से गोबर और गोमूत्र खरीदा। खेती आदान बनाने के लिए वह हरियाणा से तंबाकू भी लाए ताकि प्राकृतिक खेती का यह अभियान कुंद न होने पाए। इसी साल उन्होंने राजस्थान से साहीवाल नस्ल की गाय खरीदी है ताकि वह समय की बचत के साथ खेती पर ज्यादा ध्यान दे सकें।

कर्म सिंह के साथ क्षेत्र के 10 से 12 किसान भी जुड़े हैं जिन्हें मार्गदर्शन के साथ वह गोबर, गोमूत्र और अन्य प्राकृतिक खेती आदान भी बेच रहे हैं। कर्म सिंह कहते हैं कि सरकार की 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना से किसान खेती के प्रति प्रेरित हो रहे हैं।

रवी सीजन के दौरान उन्होंने 1 बीघा में गेहूं की बंसी किस्म का 6 किलोग्राम बीज बोया था जिससे 1.5 क्विंटल गेहूं की पैदावार हुई है। अंतर–फसल के तौर पर 50 किलोग्राम मटर और सरसों भी पैदा हुआ है। खरीफ सीजन में वह मक्की के साथ अन्य सब्जियां लगाने की योजना बना रहे हैं।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि पर प्रश्न करने वालों को मेरा विनम्र आग्रह - मेरी फसलों को एक बार तो देखो। प्रश्न मन में होंगे और उत्तर स्वयं मेरे खेत देंगे।

अपने परिवार के साथ प्राकृतिक खेती किसान कर्म सिंह

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
7 बीघा	7 बीघा	गेहूं, चना, गोभी, मटर, करेला, सरसों	व्ययः 15,000 आयः 1,15,000	व्ययः 2,000 आयः 1,30,000

पूर्व सैनिक के प्रोत्साहन का कमाल दो सहेलियां बनी प्राकृतिक खेती की सारथी

खेती का जुनूनः गोबर-गोमूत्र के लिए 200 किलोमीटर दूर से लाई देसी गाय

रामकली, मो. 98823-43048

अपनी पहचान के लिए जिंदगी भर जद्दोजहद कर एक नारी यूं ही समय बिताती चली जाती है। वहीं कुछ ऐसी भी महिलाएं होती हैं, जिन्होंने न सिर्फ अपनी पहचान खुद बनाई, बल्कि अपने वजूद को नाम भी दिया है। श्री नैना देवी जी ब्लॉक की दो महिला किसानों ने 'प्राकृतिक खेती' की अलख जगाकर समाज में ही नहीं बल्कि अपने जिले में भी नाम कमाया है। 'कुटैहला' गांव की दो सहेलियों **पवनेश कुमारी** और **रामकली** ने न सिर्फ अपने परिवारों को आर्थिक रूप से और अधिक सशक्त बनाने के लिए अपनें खेतों में 'प्राकृतिक खेती' को अपनाकर अपने खर्चे को शून्य तक पहुंचा दिया, बल्कि अपने साथ अन्य किसानों को जोड़ने का बीड़ा भी उठाया है। अभी इन दोनों प्रगतिशील महिला किसानों को प्राकृतिक खेती विधि को शुरू किये हुए 1 साल का ही समय हुआ है। लेकिन पहले साल में ही आए बेहतर परिणामों और खेती के उन्नत मॉडल खड़े किए जाने के कारण पूरे जिले में इनके खेती मॉडल की चर्चा है। महिला किसान रामकली बताती हैं कि हम दोनों अपने परिवार की कमाई में बढ़ावा देने और खेती में बढ़ते खर्चे को कम करने के लिए विकल्प तलाश रही थी। इसी दौरान हमने हिमाचल के पूर्व राज्यपाल आचार्य देवव्रत का भाषण सुना जिसमें वे कम लागत और किसान की आय बढ़ाने वाली प्राकृतिक खेती के बारे में बता रहे थे। बस फिर क्या था हमने इस खेती विधि के बारे में कृषि अधिकारियों से संपर्क किया। इसके बाद प्रदेश सरकार की ओर से शुरू की गई प्राकृतिक खेती के बारे में पद्मश्री सुभाष पालेकर से छह दिन का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के तुरंत बाद हमने अपने खेतों में इस खेती विधि से खेती करना शुरू कर दिया। खेती पद्धति में बताए सभी आदानों के प्रयोग और उनके निर्माण के लिए दोनों महिला किसानों ने हरियाणा से रेड सिंधी नस्ल की गायें भी खरीदी हैं।

रामकली 4 बीघा जमीन में मक्की, बैंगन, सोयबीन, टमाटर, अरबी, घीया, खीरा और मूंग की खेती कर रही हैं। रामकली इस खेती पद्धति के बारे में अपनी बेटी को बताने के साथ अन्य किसानों से भी साझा कर रही हैं ताकि अन्य किसान भी मंहगे कीटनाशकों और खादों के चक्रव्यूह से बाहर निकलें और स्वस्थ भोजन पा सकें।

सफल प्राकृतिक खेती किसान रामकली फसल निरीक्षण करते हुए

रामकली की सहेली पवनेश कुमारी 5 बीघा जमीन में मक्की, सोयबीन, अरबी, हल्दी, अदरक, मिर्च और भिंडी उगा रही हैं। पवनेश कुमारी ने अपने परिवार को इस खेती विधि को अपनाने के लिए पूरी तरह भरोसे में लिया है। पवनेश के सास और ससुर प्राकृतिक खेती विधि की बहुत सराहना करते हैं। पवनेश के ससुर और भूतपूर्व सैनिक नरोत्तम दत्त सांख्यान का कहना है कि प्राकृतिक खेती विधि से उनके खेतों की मिट्टी के सेहत में लगातार सुधार हो रहा है। खेतों में उगने वाली सब्जियों और अनाज का स्वाद लाजवाब है। हमारे खेतों में कई अन्य किसान भी फसलों को देखने के लिए आते हैं। पवनेश का कहना है कि जीवामृत में सूक्ष्मतत्व होते हैं इसलिए यह पौधों को सही पोषण व बढ़वार में मदद करता है।

पवनेश के सास-ससुर ने तो हमारी इतनी हौसला अफजाई की कि दो से अब कई सहेलियां बन गई हैं। जल्दी ही पूरे गांव को रसायनमुक्त जो करना है।

परिवार के साथ प्राकृतिक खेती किसान रामकली

अपने खेत में पवनेश कुमारी

रसायनमुक्त उत्पाद का पूरा किया अरमान
मेरी खेती-मेरा सम्मान

नानक राम की जहरमुक्त सब्जियों का इन्तजार करते हैं ग्राहक

नानक राम, मो. 82195-49592

अच्छी सेहत इंसान के जीवन को सुखमय और खुशहाल बनाती है। अच्छी सेहत के लिए स्वस्थ और पोषणयुक्त भोजन की जरूरत होती है जिसके लिए एक रसायन रहित खेती प्रणाली की जरूरत है। 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' रसायनमुक्त प्रणाली की यह जरूरत पूरा करती है। यह कहना है बिलासपुर के 'नौणी' गांव के प्राकृतिक खेती किसान नानक राम का। अक्तूबर 2019 में प्राकृतिक खेती की शुरूआत करने वाले **नानक राम** पहले आसपास के अन्य किसानों की तरह रसायनिक खेती कर रहे थे। मगर रसायनिक खेती से उपजी स्वास्थ्य समस्याओं के निरंतर आने वाले समाचार उन्हें झकझोर रहे थे।

नानक राम कम लागत और रसायनों का कम से कम प्रयोग करने वाली खेती प्रणाली की तलाश कर रहे थे। इसी बीच उन्हें कृषि विभाग की आतमा परियोजना के अधिकारियों से प्राकृतिक खेती के बारे में पता चला। गांव में आयोजित 2 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर से उनका इस खेती के प्रति जुड़ाव हुआ और उन्होंने 2019 में राजस्थान जाकर 6 दिन का प्रशिक्षण हासिल किया। इसके बाद उन्होंने प्राकृतिक विधि से अपनी 2.5 बीघा भूमि पर खेती शुरू की। पहले–पहल खेती आदान बनाने के वह 30 किलोमीटर का सफर तय कर महीने में 2 बार देसी गाय का गोबर लाते थे।

बढ़ती खेती लागत से लोग खेती से दूर होते जा रहे हैं, प्राकृतिक खेती से लागत में कमी आई है। आशा है कि इस खेती पद्धति के जरिए दुबारा लोग खेती की तरफ आएंगे।

भिण्डी की फसल का निरीक्षण करते हुए सफल किसान नानक राम

नानक राम रसायनिक खेती में केवल मक्की और गेहूं ही लगाया करते थे। मगर प्राकृतिक खेती के दौरान उन्होंने मुख्य फसल के साथ अंतवर्तीय फसलें लगाईं। इसके साथ ही सब्जियों की खेती शुरू की जिससे उनकी आय में बढ़ोतरी हुई। सब्जियों में करेला, घीया, मटर, आलू, बैंगन और शिमला मिर्च की उन्हें अच्छी पैदावार मिली। नानक राम ने इन सब्जियों को बेचने के लिए अपनी दुकान खोली है जहां 2 घंटे के अंदर ही सारी सब्जियां बिक जाती हैं।

खुद लीवर की बीमारी से ग्रसित नानक राम स्वास्थ्य की महत्ता बखूबी समझते हैं और उस पर बल भी देते हैं। अपने आस–पास के किसानों को वह प्राकृतिक खेती के प्रति प्रेरित करते हैं। दूर–दूर से लोग उनके मॉडल फार्म पर एक्सपोजर विजिट के लिए भी आते हैं। नानक राम कहते हैं कि किसान देखकर ज्यादा सीखता है इसलिए वह जब भी किसी किसान को प्राकृतिक खेती के बारे में बताते हैं तो वह उसे अपने मॉडल फार्म पर आने का न्यौता भी देते हैं।

प्राकृतिक खेती से जहां नानक राम ने अपनी आर्थिकी को बढ़ाया है वहीं उन्होंने 2 लोगों को रोजगार भी दिया है। 2.5 बीघा से शुरूआत कर आज वह अपनी पूरी 7 बीघा जमीन में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। नानक राम का सपना है कि उनका गांव प्राकृतिक खेती के लिए आदर्श स्थापित करे।

पालेकर जी की प्राकृतिक खेती ने एक सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी से उत्साही किसान ही नहीं बल्कि एक डॉक्टर भी बना दिया। कैंसर से लेकर लीवर तक के मरीज मेरे ही खेत से सब कुछ ले जाते हैं।

अपने परिवार के साथ प्राकृतिक खेती किसान नानक राम

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रसायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
7 बीघा	7 बीघा	गेहूं, मक्की, चना, आलू, मटर, सरसों, भिंडी, घीया, करेला, बैंगन, धनिया, मेथी, शिमला मिर्च, फ्रासबीन, लहसुन, प्याज, पालक	व्ययः 22,000 आयः 30,000	व्ययः 25,000 आयः 85,000

पहले ताने देते थे, अब प्राकृतिक खेती करना चाहते हैं गांव वाले

सह-फसल सिद्धांत से आकर्षित हो रहे आस-पास के किसान

अमीचंद शर्मा, मो. 98170-93663

बिलासपुर के 'लुहणू' गांव के किसान **अमीचंद शर्मा** ने 'प्राकृतिक खेती' की शुरूआत की तो गांव वालों ने उन्हें बहुत ताने मारे। अक्सर साथी किसान उन्हें यह कहते थे कि प्राकृतिक विधि से खेती करने पर उत्पादन नहीं होगा और पुरानी चली आ रही खेती पद्धति बदलने से भूमि बंजर भी हो सकती है। मगर गांववालों की बातों को नजरअंदाज कर अमीचंद प्राकृतिक खेती करने में लगे रहे और आज उनके खेतों को देखकर गांव के लोग प्राकृतिक खेती से जुड़ना शुरू हो गये हैं।

शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हुए घुमारवीं विकास खण्ड के अमीचंद शर्मा 2018 से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। इस खेती की शुरूआत उन्होंने पालमपुर विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद की। जीवामृत और घनजीवमृत का खेतों में इस्तेमाल करने से अच्छी गुणवत्ता के अनाज की पैदावार हुई। अमी चंद कहते हैं कि इस खेती विधि की बाजार पर कम निर्भरता और कम खेती लागत किसान के लिए फायदेमंद है। जहां परंपरागत रसायनिक खेती में किसान एक फसल लेता है वहीं प्राकृतिक खेती के सह–फसल सिद्धांत का पालन कर किसान उसी खेत से ज्यादा आय कमा लेता है।

अमी चंद के परिवार के सभी सदस्य खेती में उनका सहयोग करते हैं। उन्होंने बताया कि उनकी 82 वर्षीय माता

प्राकृतिक खेती सभी के लिए फायदेमंद है। मैं किसान भाइयों से आग्रह करना चाहता हूं कि प्राकृतिक खेती की शुरूआत करें और खेती को रसायनमुक्त करने का सपना साकार करें।

सफल प्राकृतिक खेती किसान अमीचंद शर्मा का मिश्रित खेती मॉडल

भी इस खेती को लेकर उत्साहित हैं और हर दिन खेतों में काम करती हैं। अमीचंद के दोनों बेटे भी खेती में उनका हाथ बंटाते हैं। अमीचंद ने प्राकृतिक खेती से मक्की, मूंग, उड़द, सोयाबीन, धान, घीया, करेला, भिण्डी, मटर, गेहूं, चना, सरसों की फसल ली है। प्राकृतिक विधि से तैयार अनाज और सब्जियां रसायनिक के मुकाबले ज्यादा स्वादिष्ट हैं। प्राकृतिक रूप से धान लगाने का भी उन्होंने अनुभव प्राप्त किया है, हालांकि इसमें उन्होंने सह–फसल के तौर पर कोई अन्य फसल नहीं लगाई है।

इस साल रवी सीजन के दौरान उन्होंने गेहूं की बंसी किस्म का 10 किलोग्राम बीज बोया था, जिससे उन्हें 1 क्विंटल गेहूं की पैदावार हुई है। अंतर–फसल के तौर पर लगे मटर और सरसों में जीवामृत और घनजीवामृत के प्रयोग से पैदावार में बढ़ोतरी हुई है। अभी खरीफ सीजन के लिए उन्होंने मक्की की बुआई की है। प्राकृतिक और रसायनिक मक्की में साफ अंतर दिख रहा है। कोई भी फसल देखकर इस अंतर को आसानी से बता सकता है। अमीचंद की आगामी योजना देसी गाय खरीदने की है, ताकि वह ज्यादा से ज्यादा मात्रा में प्राकृतिक खेती आदान बनाकर नए प्राकृतिक खेती किसानों को दे सकें।

संस्कृत अध्यापक पद से सेवानिवृत्ति के बाद खेती के लिए आस-पास के ताने सुनना कष्टदायक था। लेकिन यह तो पालेकर जी का ही जादू था जो बोलते थे-ताने सुन लिए तो समझो सफल हो गए। ऐसे ही मैं भी सफल हो गया।

अपने परिवार के साथ खुशहाल किसान अमीचंद शर्मा

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रासायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
8 बीघा	8 बीघा	मक्की, मूंग, उड़द, सोयाबीन, धान, घीया, करेला, भिण्डी, मटर, गेहूं, चना, सरसों	व्ययः 12,000 आयः 28,000	व्ययः 7,000 आयः 30,000

उपभोक्ता को खुद है प्राकृतिक खेती उत्पाद की दरकार

गांव वालों ने प्रेरणा पाकर मंगल सिंह के मार्गदर्शन में शुरू की प्राकृतिक खेती

मंगल सिंह ठाकुर, मो. 86280-36647

श्री नैना देवी विकास खण्ड के **मंगल सिंह ठाकुर** का बचपन से ही खेती के प्रति रूझान रहा है। जब बड़े हुए और जीवनयापन के लिए क्षेत्र विशेष को चुनने का समय आया तो उन्होंने खेती को चुना। पिछले 4 दशकों से खेती कर रहे मंगल सिंह को साल दर साल ज्यादा दवा कीटनाशकों की जरूरत महसूस हो रही थी। इसी बीच वह बढ़ती खेती लागत और अच्छी पैदावार के लिए दवाइयों पर बढ़ती निर्भरता का लगातार आकलन भी कर रहे थे। वह कीट और खरपतवारनाशकों का प्रयोग छोड़ना चाहते थे मगर लंबे वक्त से चली आ रही रसायन अधारित खेती छोड़ना कठिन महसूस हो रहा था। सबसे बड़ा सवाल जो उनके मन में उठ रहा था वह परिवार के भरण पोषण का था। नई खेती तकनीक अपनाने में बड़ा जोखिम था। तभी कृषि विभाग के अधिकारियों ने कर्म सिंह का मार्गदर्शन किया और उन्हें 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के बारे में बताया।

'प्राकृतिक खेती' तकनीक के बारे में जानकारी मिलने के बाद मंगल सिंह कृषि विभाग के माध्यम से वर्ष 2018 में महाराष्ट्र में 6 दिन के प्रशिक्षण शिविर का हिस्सा भी बने। घर लौटने के बाद उन्होंने पड़ोसी से देसी गाय का गोबर और

टमाटर की फसल का निरीक्षण करते हुए सफल किसान मंगल सिंह

प्राकृतिक खेती से उगाए गए फल सब्जियों का स्वाद अलग ही है। जो भी एक बार प्राकृतिक फल-सब्जियों का स्वाद चखता है, फिर उसे रसायनयुक्त चीजें अच्छी ही नहीं लगती। मेरे पास लोग लगातार आर्डर दे रहे हैं।

गोमूत्र खरीद कर आदान बनाना शुरू कर दिया। अपनी 2 बीघा जमीन पर उन्होंने प्रायोगिक तौर पर प्राकृतिक खेती का आरंभ किया। जब प्राकृतिक खेती से अच्छे नतीजे मिले तो उन्होंने खेती क्षेत्र बढ़ाकर 10 बीघा कर दिया और राजस्थान से साहीवाल नस्ल की गाय भी ले आए।

मंगल सिंह को प्राकतिक खेती करते हुए अब 2 साल हो गए हैं। उन्होंने प्राकृतिक खेती से अनाज सब्जियां और फल उगाए हैं। मंगल सिंह ने बताया कि प्राकृतिक खेती के अंतर–फसल सिद्धांत का पालन करने से उन्हें अतिरिक्त आय मिली है। रवी सीजन में उन्हें गेहूं की बंपर पैदावार मिली है। ब्लॉक से मिले बंसी किस्म के 6 किलोग्राम बीज से उन्हें 1.5 क्विंटल गेहूं की उपज मिली है। बैंगन, भिंडी, लौकी और मटर की फसल को उन्होंने बिलासपुर और सोलन दोनों जिलों में बेचा है। वह कहते हैं कि उनसे एक बार फल, सब्जी खरीदने वाला उन्हें खुद फोन कर के आर्डर देता है। अधिकतर खरीददारों का कहना है कि सब्जियां स्वादिष्ट और टिकाऊ हैं।

अपने क्षेत्र में प्राकृतिक खेती के विस्तार हेतु मंगल सिंह भी प्रयासरत हैं। वह अपने आस–पास के किसानों को इस खेती के बारे में बताते हैं और उनसे इसको अपनाने का आग्रह करते हैं। वह कहते हैं कि हिमाचल सरकार की यह योजना किसान के लिए लाभदायक है।

मुझे तो कभी भी नहीं लगा कि मार्केट नहीं मिलती। एक बार शुद्ध, प्राकृतिक एवं रसायनमुक्त उगाकर तो देखो। खरीददार तैयार बैठा है।

अपने परिवार के साथ प्राकृतिक खेती किसान मंगल सिंह

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें एवं फल	रासायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
28 बीघा	10 बीघा	गेहूं, मक्का, चना, मटर, टमाटर, बीन्स, भिंडी, बैंगन, लौकी, सरसों लीची, आम	व्ययः 40,000 आयः 3,00,000	व्ययः 10,000 आयः 5,00,000

ब्रह्मदास की पहल ने फ्योड़ी को बनाया रसायनमुक्त गांव

गर्व से कहता हूं फ्योड़ी गांव रसायनमुक्त खेती करने वाला गांव है

ब्रह्मदास, मो. 82618-79530

बदलाव की शुरुआत एक छोटे से प्रयास से होती है और ऐसा ही एक छोटा सा प्रयास बिलासपुर के 'फ्योड़ी' गांव के सेवानिवृत शिक्षक **ब्रह्मदास** ने 2 साल पहले अपने गांव को रसायनमुक्त करने के लिए किया था। बदलाव की यह इबारत ब्रहमदास ने 2018 में नौणी विश्वविद्यालय से 'प्राकृतिक खेती' में प्रशिक्षण के बाद लिखनी शुरू की। 1 महीने तक सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती तकनीक को समझने और उसके प्रयोग देखने के बाद ब्रहमदास ने अपनी खेती में इस तकनीक का इस्तेमाल करना शुरू किया। घर में देसी गाय होने से प्राकृतिक खेती आदान बनाने में काफी सहूलियत मिली जिससे इनका काम और आसान हो गया। ब्रह्मदास ने सबसे पहले खुद रसायनों के प्रयोग को बंद करके प्राकृतिक खेती अपनाई और एक सफल मॉडल पेश किया। इनकी देखा–देखी में आस–पड़ोस और गांववालों ने भी प्राकृतिक खेती को अपनाया और अब आलम यह है कि गांव में खाद और कीटनाशकों की बिक्री बंद हो गई है। फ्योड़ी गांव पूरी तरह से रसायनमुक्त हो गया है।

जून 2018 में एक महीने की नौणी विश्वविद्यालय और सितंबर में पालेकर जी के प्राकृतिक खेती पद्धति के प्रशिक्षण ने इस खेती की ओर मोड़ा, पहले खुद करना शुरू की और फिर पूरे गांव को बदला। सेवानिवृत मुख्याध्यापक हूं पर यह खेती मुझे अधिकारियों एवं समाज का इतना चहेता बना देगी, इसकी कल्पना भी नहीं की थी।

ब्रह्मदास का सफल मिश्रित खेती मॉडल

ब्रह्मदास से प्रेरणा पाकर फ्योड़ी गांव के 30 किसान पूरी तरह से प्राकृतिक खेती विधि को अपना चुके हैं। वहीं साथ लगते गांव जोल–पलाखी में भी प्राकृतिक खेती विधि के तहत किसान खेती कर रहे हैं। इस गांव में किसानों ने प्राकृतिक खेती समूह बनाया है। समूह के साथ अभी तक 50 किसान जुड़ चुके हैं, शेष बचे लोग भी प्राकृतिक खेती विधि की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

फ्योड़ी गांव में जब लोग रसायनिक खेती विधि से खेती कर रहे थे तो उस दौरान गांव में हर साल लगभग 50 हजार रूपये की खाद आती थी, जोकि अब पूरी तरह बंद हो गई है। इससे किसानों की खेती लागत में कमी आई है। ब्रह्दास के प्रयासों से ही गांव में 200 बीघा कृषि क्षेत्र की सोलर फेंसिंग की गई है, जिससे प्राकृतिक खेती गांव बन चुके फ्योड़ी में किसानों की फसलें जंगली जानवरों से बच गई हैं। ब्रह्मदास एक मास्टर ट्रेनर के तौर पर क्षेत्र के किसानों को प्राकृतिक खेती विधि के बारे में जागरूक करने के साथ उन्हें इस पुनीत आंदोलन में जोड़ने का काम कर रहे हैं।

अपने प्राकृतिक खेती समूह के साथ किसान ब्रह्मदास

कुल जमीन	प्राकृतिक खेती के अधीन जमीन	फसलें	रासायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
9 बीघा	9 बीघा	गेहूं, मक्का, सोयाबीन, मिर्च, खीरा, करेला, गोभी, मूंग, धनिया	व्ययः 5,000 आयः 25,000	व्ययः 1,000 आयः 50,000

सेल सेल सेल

50 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने हेतु दिया जाएगा प्रशिक्षण

बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्य सचिव वीसी अध्वाल।

हाथोंहाथ बिके प्राकृतिक खेती के उत्पाद

हर महीने की पांच तारीख को उपायुक्त कार्यालय परिसर में सजेगी प्रदर्शनी, उपायुक्त राजेश्वर गोयल ने किया शुभारंभ

पांच तारीख को महिलाएं लगाती है प्रदर्शनी

हर रोज उत्पाद बेचने की होगी व्यवस्था

कीटनाशकों से थाली में पहुंच रहा जहर

2022 में हिमाचल बनेगा प्राकृतिक कृषक राज्य

शून्य लागत प्राकृतिक खेती पर काम करेंगे कृषि विज्ञान केंद्र

पंजाब केसरी 26 मार्च 2018

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में बोले प्रसार शिक्षा निदेशक

कार्यक्रम का आगाज

किसानों को समझाएं नई तकनीक

कृषि निर्यात नीति कार्यशाला में मार्कंडेय के विशेषज्ञों को निर्देश

अंतरराष्ट्रीय स्तर के मेलों में सहभागिता से किसान खुश

इन किसानों ने एक्सपो में भाग लिया

बिलासपुर के किसान ने प्राकृतिक खेती से की अपनी आर्थिकी मजबूत

प्राकृतिक कृषि से आर्थिकी को मिला बल

प्रेम लाल और ब्रह्म दास

प्राकृतिक खेती अपनाई... रासायनिक खाद दूर भगाई

बिलासपुर में 142 हेक्टेयर में शुरू की खेती, मई और जून महीने में विभाग ने 1687 किसानों को किया ट्रेंड

प्राकृतिक खेती से जगन्नाथ के जीवन में आई खुशहाली

डीसी आफिस में लगेंगे प्राकृतिक उत्पाद के स्टाल

प्राकृतिक खेती में रुझान बढ़ाएगी सरकार

कम लागत में किसानों की आमदन बढ़ाने के लिए हुआ मंथन

वरिष्ठ संवाददाता – शिमला

प्रदेश के किसानों को प्राकृतिक खेती से प्रेरित करने के लिए प्रदेश सरकार ने रोडमैप तैयार कर दिया है। कृषि लागत में कमी और किसानों की आय में बढ़ोतरी के लिए प्रदेश में शुरू की गई प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के कार्य की प्रगति को लेकर सचिवालय में प्रधान सचिव कृषि ओंकार शर्मा की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक की गई। इस बैठक में प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत शुरू की गई सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि के प्रचार और किसानों के लिए चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में 12 जिला के प्रोजेक्ट डायरेक्टर, डिप्टी प्रोजेक्ट डायरेक्टर और विषयवाद विशेषज्ञों से जानकारी ली गई। बैठक के दौरान प्रधान सचिव कृषि ओंकार शर्मा ने अधिकारियों को अधिक से अधिक किसान-बागवानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करके सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के अंतर्गत लाने के लिए कहा। इसके अलावा उन्होंने अधिकारियों से कहा कि इस खेती विधि को अपनाने से यदि किसी किसान की आय में कमी हुई है, तो उसकी भी रिपोर्ट तैयार करके उन्हें सौंपे।

इस मौके पर प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के परियोजना निदेशक राकेश कंवर ने चार जिलों लाहुल-स्पीति, चंबा, सिरमौर और मंडी में किए जा रहे कार्यों की सराहना की और अन्य जिलों को दिए गए लक्ष्यों को जल्द पूरा करने के निर्देश जारी किए।

मंडी में होगा पांच हजार किसानों का सम्मेलन

राज्य परियोजना निदेशक राकेश कंवर ने कहा कि इस साल के 50 हजार किसानों को जोड़ने के लक्ष्य के साथ ही अगले साल की तैयारियां भी शुरू कर दी गई हैं। उन्होंने कहा कि जैसे ही बीजाई का सीजन खत्म होगा, उसके तुरंत बाद मंडी जिला में पांच हजार से अधिक किसानों का एकदिवसीय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इसके अलावा उन्होंने कहा कि किसानों को देसी नस्ल की गाय की खरीद में अधिकतम 25 हजार की सब्सिडी देना शुरू कर दिया है। समीक्षा बैठक के दौरान योजना के कार्यकारी निदेशक डा. राजेश्वर सिंह चंदेल ने कहा कि सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि को प्रदेश में प्रभावी तरीके से अपनाने के लिए पूरे देश में हिमाचल को शाबाशी मिल रही है।

- प्रधान सचिव कृषि ओंकार शर्मा ने की समीक्षा बैठक

बिलासपुर में प्राकृतिक खेती से तैयार सब्जी की बिक्री शुरू

उत्तम खेती... इंजीनियर से बना किसान

प्राकृतिक खेती की बारीकियां सीखी

नौणी विश्वविद्यालय में जुटे नौ जिलों के एक हजार किसान

प्राकृतिक फसल की बढ़ी मांग

आईटी की नौकरी छोड़ अपनाई खेती

अन्य किसानों को भी किया प्रेरित

जिला आतमा टीम

डॉ॰ रवि कुमार शर्मा
जिला परियोजना निदेशक आतमा

हमारी टीम इस खेती विधि को घर-घर तक पहुंचाने के लिए पूरी तन्मयता से काम कर रही है। इसी का नतीजा है कि वर्ष 2019-20 में बिलासपुर जिला के 3,017 किसानों ने 'प्राकृतिक खेती' विधि को अपना लिया है।

डॉ॰ देश राज शर्मा
जिला परियोजना उप – निदेशक – I

कोविड-19 महामारी की वर्तमान परिस्थिति में भी हम सब अपने बीटीएम/एटीएम के साथ किसानों तक 'प्राकृतिक खेती' विधि पहुंचाने में सफल रहे हैं जिससे इस खेती विधि से भारी संख्या में किसान जुड़ रहे हैं।

डॉ॰ राजेश कुमार
जिला परियोजना उप – निदेशक – II

किसानों को 'प्राकृतिक खेती' में बदलने के लिए 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' से मिले लक्ष्यों को हम तय समय सीमा से पहले पूरा कर लेंगे। यह खेती विधि किसानों की कृषि लागत में कमी लाकर उनकी आय में वृद्धि करने वाली है। किसान इस खेती विधि को शीघ्रता से अपना रहे हैं।

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

रजनी
बीटीएम (बिलासपुर सदर)

सुदर्शन चंदेल
बीटीएम (घुमारवीं)

नितीश कमार
बीटीएम (झंडूता)

पुष्पेंद्र कुमार
बीटीएम (श्री नैना देवी जी)

हेम सिंह
एटीएम (बिलासपुर सदर)

सुरेश कुमार
एटीएम (घुमारवीं)

तनुजा
एटीएम (झंडूता)

विकास ठाकुर
एटीएम (श्री नैना देवी जी)

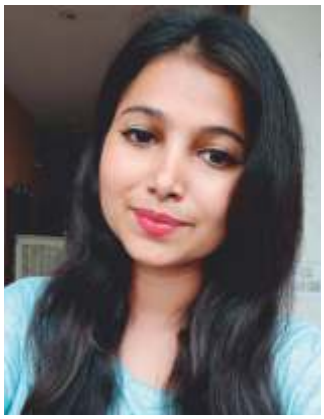

शबाना चंदेल
एटीएम (बिलासपुर सदर)

कुबेर सिंह
एटीएम (घुमारवीं)

दीपिका
एटीएम (झंडूता)

पवन कुमार
एटीएम (श्री नैना देवी जी)

प्राकृतिक खेती पर किये गए कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों के निष्कर्ष

- इस विधि से **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** गतिविधियों को बढ़ावा मिलता सिद्ध हुआ है। यह **एंजाइम** सीधे मिट्टी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। 'रासायनिक' और 'जैविक खेती' की तुलना में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के तहत **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** की गतिविधि (DHA) उच्चतम ($8.4\ \mu g\ TPFg^{-1}\ h^{-1}$) दर्ज की गई, यानि मिट्टी की गुणवत्ता फसल उत्पादन के बाद बढ़ती प्रतीत हुई है।

- इसके अलावा, **क्षारीय फॉस्फेटेज** और **अम्लीय फॉस्फेटेज** जैसी अन्य **एंजाइम** गतिविधियों को भी 'प्राकृतिक खेती' के तहत 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' से अधिकतम ($112\ \mu g\ TPFg^{-1}\ h^{-1}$) दर्ज किया गया। अतः **SPNF** प्रणाली 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले में बढ़ी हुई **एंजाइम** गतिविधियों द्वारा मिट्टी की उर्वरा शक्ति में सुधार करने हेतु अधिक कारगर सिद्ध हुई है।

- **SPNF** प्रणाली में देसी केंचुओं की आबादी में भी अधिक वृद्धि देखी गई। 'प्राकृतिक खेती' के तहत विभिन्न उच्च घनत्व वाले सेब के बागानों में, केंचुओं की आबादी उच्चतम दर्ज की गई जो मिट्टी के 0-15 सेमी गहराई में 32 केंचुआ / फीट^2 थी। ये केंचुआ प्रजाति, मिट्टी के स्वास्थ्य और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मृदा को **नाइट्रोजन, फास्फोरस** और **पोटेशियम** आदि जैसे कई पोषक तत्वों द्वारा समृद्ध बनाते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** में प्रमुख रूप से बैक्टीरिया, एंजाइम, पौधे के अपघटित अवशेष, केंचुआ कुकुन, पशुओं एवं अन्य जीवों के अपशिष्ट इत्यादि जैविक मिश्रण के रूप में विद्यमान होते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** आसानी से उपलब्ध पानी में घुलनशील पौधे पोषक तत्वों का बहुत समृद्ध स्रोत हैं, जो कि उपरी मिट्टी सतह में सामान्य रूप में मौजूद ह्यूमस (Humus) की तुलना में अधिक होते हैं।

- प्रदेश के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में यह खेती विधि मिट्टी में नमी की मात्रा, 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले 1.5-7.9% अधिक बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुई है। **SPNF** खेती के तहत किए गए एक शोध में मटर-टमाटर की फसल उत्पादन के एक साल उपरान्त मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता में 329 कि.ग्रा./है० से 358 कि.ग्रा./है० की वृद्धि दर्ज की गई।

जिला स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

क्रम संख्या	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
1	डॉ॰ रवि कुमार शर्मा	जिला परियोजना निदेशक आतमा	94182-13017		151
2	डॉ॰ देश राज शर्मा	जिला परियोजना उप – निदेशक – I	94180-06549	88	
3	डॉ॰ राजेश कुमार	जिला परियोजना उप – निदेशक – II	85804-35175	63	

खण्ड-स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

विकस खण्ड	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
बिलासपुर सदर	रजनी	बीटीएम	96252-10937	13	39
	हेम सिंह	एटीएम	82193-97010	13	
	शबाना चंदेल	एटीएम	70182-99665	13	
घुमारवीं	सुदर्शन चंदेल	बीटीएम	70181-94366	17	49
	सुरेश कुमार	एटीएम	88949-68213	14	
	कुबेर सिंह	एटीएम	86794-15102	18	
झंडूता	नितीश कमार	बीटीएम	96255-36668	15	39
	तनुजा	एटीएम	78072-22856	11	
	दीपिका	एटीएम	82192-15617	13	
श्री नैना देवी जी	पुष्पेंद्र कुमार	बीटीएम	70183-05484	8	24
	विकास ठाकुर	एटीएम	79734-07578	8	
	पवन कुमार	एटीएम	98169-81900	8	